17 दिसम्बर 2017, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2015-17

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के
व्याख्यान प्रतिदिन अब आधे घंटे
जिनवाणी चैनल पर
जिनवाणी JINVANI सुख, शान्ति, समृद्धि
प्रतिदिन
प्रातः 6.30 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 40, अंक : 18 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

दिसम्बर (द्वितीय), 2017 (वीर नि. संवत्-2544) सह-सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा व पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव संपन्न

उदयपुर (राज.) : यहाँ सूरजपोल स्थित फतह उच्च माध्यमिक विद्यालय प्रांगण में आयोजित श्री 1008 आदिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव श्री कुन्दकुन्द कहान शाश्वत पारमार्थिक ट्रस्ट के तत्त्वावधान में शनिवार, दिनांक 2 दिसम्बर से गुरुवार 7 दिसम्बर 2017 तक अनेक विशिष्ट कार्यक्रमों सहित सानन्द सम्पन्न हुआ।

महोत्सव में आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों के अतिरिक्त अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान **डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल** द्वारा प्रतिदिन पंचकल्याणक महोत्सव विषय पर हुए मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। आपके अतिरिक्त ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित विमलचंदजी झांझरी उज्जैन, पण्डित वीरेन्द्रकुमारजी जैन आगरा, पण्डित शैलेषभाई अहमदाबाद, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित अनिलजी शास्त्री भिण्ड, पण्डित रजनीभाई दोशी, ब्र.श्रेणिकजी इत्यादि अनेक विद्वानों के प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ।

यह महोत्सव ब्र. जतीशचंदजी शास्त्री दिल्ली के प्रतिष्ठाचार्यत्व में एवं पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर के निर्देशन में संपन्न हुआ। सह-प्रतिष्ठाचार्य ब्र. श्रेणिकजी, ब्र. मनोजजी जबलपुर, पण्डित अशोकजी जैन उज्जैन, ब्र. सुकुमालजी झांझरी उज्जैन, पण्डित सम्मेदजी जैन टीकमगढ आदि थे। इसके अतिरिक्त पण्डित ऋषभजी शास्त्री छिन्दवाड़ा, पण्डित अजितजी शास्त्री अलवर, पण्डित मनीषजी शास्त्री पिड़ावा, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, पण्डित राकेशजी शास्त्री दाहोद, पण्डित आशीषजी शास्त्री टीकमगढ, पण्डित अश्विनजी नानावटी नौगामा, पण्डित सचिनजी शास्त्री चैतन्यधाम, श्री दिव्यांशजी अलवर आदि का भी सहयोग प्राप्त हुआ।

मंच संचालन पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली एवं पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन द्वारा किया गया।

बालक ऋषभकुमार के माता-पिता बनने का सौभाग्य श्रीमती किरण-ललित कीकावत लूणदा को प्राप्त हुआ। महोत्सव के सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी श्री ब्रजलाल-मधु हथाया मुम्बई, कुबेर इन्द्र श्री आई.एस. जैन मुम्बई एवं यज्ञनायक-नायिका श्री दीपक-भारती जैन इन्दौर थे। सिंहद्वार का उद्घाटन श्री कमलजी बड़जात्या मुम्बई, प्रतिष्ठा मंच का उद्घाटन श्री नेमीचंद जैन बघेरवाल परिवार, भीलवाड़ा ने एवं प्रतिष्ठा मण्डप का उद्घाटन श्री चम्पालाल-रमेशजी भण्डारी परिवार, बैंगलोर ने किया। महोत्सव का ध्वजारोहण श्री निहालचंदजी जैन, जयपुर के करकमलों से हुआ।

दिनांक 4 दिसम्बर को बाल तीर्थंकर का सर्वप्रथम अभिषेक करने का सौभाग्य श्री रवि-मोनिल हताया परिवार, मुम्बई को मिला। सायंकाल पालना झूलन का उद्घाटन श्री अनंतराय अमोलकराय सेठ एवं शांतिलाल रतिलाल शाह परिवार, मुम्बई ने किया। सर्वप्रथम आहारदान का सौभाग्य श्री नेमिशभाई शांतिलाल शाह एवं हितेनभाई अनंतभाई सेठ परिवार, मुम्बई को मिला।

मूलनायक सीमंधर भगवान के भेंट एवं विराजमानकर्त्ता श्री अनंतभाई सेठ तथा श्री नेमिशभाई शाह परिवार, मुम्बई थे। इसके अतिरिक्त श्री अजितप्रसादजी जैन दिल्ली, श्री महेन्द्रजी-राहुलजी गंगवाल परिवार जयपुर, श्री प्रदीपजी चौधरी किशनगढ, श्री सुरेशजी पाटनी कोलकाता आदि अनेक महानुभावों का विशेष आर्थिक सहयोग प्राप्त हुआ।

संपूर्ण महोत्सव में पूजन, प्रवचन, आध्यात्मिक गोष्ठियों, बाल-कक्षाओं, भक्ति एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों की धूम मची रही। बालकक्षा डॉ. शुद्धात्मप्रभा टडैया मुम्बई द्वारा ली गई। सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अन्तर्गत शाश्वतधाम की बालिकाओं द्वारा '**बेटी पढाओ-धर्म बढाओ**' विषय पर एवं ज्ञान चेतना मंच उज्जैन द्वारा '**सीमंधर देशना**' नामक नाटक का सुन्दर मंचन हुआ।

संपूर्ण कार्यक्रम में श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धांत महाविद्यालय के द्वितीय व तृतीय वर्ष के 40 विद्यार्थियों एवं अनेक स्नातक विद्वानों सहित देश-विदेश से पधारे लगभग 10 हजार साधर्मियों ने लाभ लिया।

महोत्सव को सफल बनाने में श्री अजितजी जैन बड़ौदा, श्री आई.एस. जैन मुम्बई, श्री कन्हैयालालजी दलावत, श्री नरेन्द्रजी दलावत, डॉ. जिनेन्द्रजी शास्त्री, डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री, पण्डित तपिशजी शास्त्री, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, श्री शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर, पण्डित खेमचंदजी शास्त्री उदयपुर, पण्डित रतनचंदजी शास्त्री कोटा, पण्डित अंकितजी शास्त्री लूणदा, श्री अशोकजी जैन भोपाल, श्री विजयजी बड़जात्या इन्दौर, डॉ. महेशजी जैन भोपाल आदि कार्यकर्ताओं

(शेष पृष्ठ 7 पर ...)

सम्पादकीय -

ऐसे क्या पाप किये?

1

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

यद्यपि बात पैंतालीस वर्ष पुरानी है; परन्तु ऐसा लगता है मानो कल की ही बात हो। हमारा एक पड़ौसी मित्र था उसका नाम था लक्ष्मीनन्दन। लक्ष्मीनन्दन पहले कभी वास्तविक लक्ष्मीनन्दन रहा होगा, अभी तो वह लक्ष्मीवन्दन नाम को सार्थक कर रहा था। प्रतिदिन लक्ष्मी की देवी को अगरबत्ती लगाता; दीपक की ज्योति जलाता; पर हाथ कुछ नहीं लगता।

हमारा और उसका घर एक ही मकान के दो हिस्सों में बटा था। दोनों घरों के बीच एक पतली सी टीन की चद्दर का पार्टीसन था। इस कारण हम दोनों एक-दूसरे की किसी भी बात से अनभिज्ञ नहीं रह पाते थे; क्योंकि एक तो पार्टीशन ही ऐसा था जो उनकी या हमारी धीमी से धीमी ध्वनि को रोकने में समर्थ नहीं था। दूसरे, परस्पर एक दूसरे के दिल ऐसे मिल गये थे कि छोटी से छोटी बातें भी हमसे कहे बिना उसे चैन नहीं पड़ती थी। वह प्रतिदिन अपने दिल की और दुःखदर्द की बातें हमसे कहकर अपना जी हल्का कर लिया करता था।

यद्यपि वह स्वभाव से सज्जन था, धर्म के प्रति प्रेम भी था, नास्तिक नहीं था; पर उसे धर्म की समझ बिल्कुल नहीं थी। यद्यपि वह पत्नी आदि को प्रवचन सुनने एवं स्वाध्याय करने में बाधक नहीं बनता; पर स्वयं में प्रवचन सुनने व स्वाध्याय करने की रुचि बिल्कुल नहीं थी। अकेला कमानेवाला था और सात-सात व्यक्तियों के खर्चे का बोझ था उसपर। धंधा भी हाट-बाजारों में जाकर धूप में खड़े रहकर हाथ ठेले पर दुकान लगाकर हल्दी, मिर्च/मसाले और अगरबत्ती आदि जैसी छोटी-मोटी वस्तुएँ बेचने का था। पूँजी के अभाव में बिचारा और करता भी क्या?

जब कोई सहानुभूति में उसकी गरीबी की बात छेड़कर उसकी दुखती नस छू लेता तो उसे शूल सा चुभ जाता था और वह अपने स्वाभिमान की रक्षा हेतु अपने पुराने दिनों को यादकर गर्व से कहने लगता, ''यह तो दिनों का फेर है वर्ना हम भी किसी लखपती से कम नहीं थे।''

उसके कहे अनुसार - वह पहले बहुत सम्पन्न तो था ही, उसकी न केवल अपने गाँव में बल्कि आस-पास के अन्य गाँवों में भी अच्छी प्रतिष्ठा थी। परन्तु जब दुर्दिन आये, पुराना पुण्य क्षीण हुआ, अबतक पुण्य के फल में मस्त रहकर नया कुछ सत्कर्म नहीं किया तो चारों ओर से एक साथ विपत्तियों से तो घिरना ही था, सो घिर गया। जो अबतक सुख के साधन थे, वे ही दुःख दरिद्रता के कारण बन गये।

वह जिस गाँव में रहता था उस गाँव में उसकी खूब खेती थी, सारे गाँव में उसके बाप-दादा के जमाने से साहूकारी फैली थी। सब सुख के साधन सुलभ थे; किन्तु दुर्दिन आते ही वे कर्जदार ही विद्रोही हो गये और नकाब ओढ़कर डाकू बनकर लूटने-पीटने लगे। उन डाकू-लुटेरों के भय से भयाक्रान्त होकर सब कुछ छोड़कर रातोंरात शहर की ओर भागना पड़ा। तभी से उसके दुर्भाग्य का सिलसिला शुरु हो गया था।

एकमात्र जीवन का सहारा २२ वर्षीय बेटा तपेदिक से ग्रस्त हुआ और २४ वर्ष की उम्र में ही दिवंगत हो गया। उस पर एक दुःख का नया पहाड़ और टूट पड़ा। मानसिक तनाव और जरूरत से ज्यादह श्रम के कारण वह स्वयं बीमार रहने लगा, पत्नी भी बीमार और चिड़चिड़ी हो गई। उन दोनों में धार्मिक दृष्टि से परस्पर में वैचारिक मतभेद तो थे ही, एक दूसरे पर दोषारोपण करने से गृह कलह भी होने लगी। उनके मात्र एक बेटा और चार बेटियाँ थीं। बेटे के असमय में दिवंगत होने से वह बहुत निराश हो गया था। बेचारी चारों बेटियाँ इन सब परिस्थितियों के कारण दीन-दुःखी और भीगी बिल्ली की भाँति सहमी-सहमी रहतीं हुई समय बिता रही थीं।

चारों बेटियाँ क्रमशः १८ से २४ वर्ष की उम्र पार कर यौवन की ओर बढ़ रही थीं। लक्ष्मीनन्दन को उनके शादी-ब्याह का विकल्प सताने लगा था। उस समय उसकी समझ में यह नहीं आ सकता था कि 'उनकी चिन्ता की जरूरत उसे नहीं करना चाहिए; क्योंकि उनका भी अपना-अपना भाग्य है। उनके भी पहले यहीं/कहीं उनके वर पैदा हो गये हैं, जो समय आने पर स्वयं माँगकर ले जायेंगे, बाद में हुआ भी यही। लड़कियाँ सुन्दर थीं, सुशील थीं, इस कारण लड़के वालों की ओर से स्वयं शादी के प्रस्ताव आ गये और सुयोग्य वरों द्वारा वे वरण कर ली गईं; परन्तु तत्त्वज्ञान के अभाव में वह तब तक निश्चिन्त नहीं हो सका था जब तक उनके विवाह नहीं हो गये।

अपनी प्रतिकूल परिस्थितियों से घबड़ा कर वह देवी-देवताओं और मंत्र-तंत्रवादियों तथा ज्योतिषियों के चक्कर काटने लगा था। जो जैसा बताता तदनुसार गृहीत मिथ्यात्व के क्रिया-कलाप करने लगा। गरीबी में गीले आटे की कहावत उस पर चरितार्थ हुई। कमाई का बहुभाग देवी-देवताओं, मंत्र-तंत्रवादियों की भेंट पूजा-पत्री में चढ़ने लगा। उसकी गरीबी और बीमारी के कारण सहानुभूति दिखाने और सहयोग करने के बहाने चुस्त-चालाक लोग उन युवा लड़कियों से घंटों गप्पे लड़ाने आ बैठते और अपनी भावनाओं को कलुषित करते रहते। अड़ौसी-पड़ौसी बगलें झाँकते और उन पर हँसते तथा व्यंगबाण छोड़ते।

मैं संयोग से उनका सर्वाधिक निकट का पड़ौसी था और प्रवचनकार पण्डित भी। पड़ौसी का धर्म निभाने के नाते मैं उन्हें मंत्र-तंत्रवादी और उन आवारा लोगों पर लगाम लगाने की बहुत सोचता; परन्तु ''मियाँ बीबी राजी तो क्या करे काजी'' की परिस्थिति में मैं कुछ भी नहीं कर सकता था।

देवयोग से उनकी पत्नी मेरी धर्मसभा की दैनिक श्रोता थी। इस कारण उसे अपने पति की वे अज्ञानजनित मिथ्या क्रिया-कलाप बिल्कुल पसन्द नहीं थे। यदा-कदा दोनों ही अपना-अपना दुःखड़ा रोते मेरे पास आ जाते और लक्ष्मीनन्दन आँखों से आँसू टपकाता हुआ कहता - **'पण्डितजी हमने पूर्वजन्म में ऐसे क्या पाप किए, जिनका यह फल हमें मिल रहा है?'**

यद्यपि उन्होंने पत्नी को हमारे प्रवचन में आने से कभी नहीं रोका, बल्कि उसकी गैर हाजरी में उसका चाय-नास्ता बनाने का काम भी स्वयं कर लेता और पत्नी को प्रवचन में जाने देता; परन्तु वह स्वयं स्वाध्याय में कभी नहीं आया, इस कारण मेरा मन उसे समझाने का नहीं होता। मैं सोचता इन्हें तत्त्व का कुछ भी अता-पता नहीं है, ऐसे व्यक्ति को मैं क्या समझाँऊ ? एक दिन वे फूट-फूट कर रोने लगे और बोले - **आप दुनिया को समझाते हो। सबको दुख दूर करने का मार्गदर्शन देते हो, और आप स्वयं भी कितने सुखी हो; हमें भी कोई उपाय बताओ।** कोई मंत्र-तंत्र हो, कोई गंडा-ताबीज हो आप जो भी उपाय बताओगे, हम सब करेंगे?

मुझ से भी उनका दुःख देखा नहीं गया, मेरी आँखों में भी आँसू आ गये; पर मेरी समझ नहीं आ रहा था कि घंटे-आध घंटे में उसे क्या बताऊँ? कैसे समझाँऊ ? कोई मंत्र-तंत्र और गंडा-ताबीज विद्या तो मुझे आती भी नहीं थी, बल्कि मैं तो उसे इस पाखण्ड से बचाना चाहता था।

अतः मैंने उससे कहा - **''भैया! तुमने पूर्व जन्म में क्या पाप किए ? यह तो मैं नहीं जानता; पर इतना अवश्य जानता हूँ कि आप वर्तमान भी पापपंक में आकण्ठ निमग्न हो। जब तक इस दल-दल से नहीं निकलोगे तब तक दुःख दूर नहीं होगा।''**

वह आँखें फाड़-फाड़ कर मेरी ओर देखने लगा। ''क्या कहा? मैंने अपनी याददाश्त में तो ऐसा कोई पाप नहीं किया।'' ऐसा कहकर वह एक-एक क्रिया कलाप गिनाने लगा।

मैंने कहा - ''यह सच है कि तुमने किसी की हत्या नहीं की, किसी की झूठी गवाही नहीं दी, किसी का कभी एक पैसा भी नहीं चुराया, कभी किसी की माँ-बहिन बेटी को बुरी निगाह से नहीं देखा। कभी किसी का शोषण करके अनावश्यक धन का संग्रह नहीं किया। तुमने पाँचों पापों में एक भी पाप नहीं किया। बीच में ही बात काटकर वह बोला - ''फिर आपने ऐसा कैसे कहा कि मैं पाप की कीचड़ में गले तक डूबा हूँ !''

दिन-रात पाप-पंक में निमग्न लोगों को यह समझाना मेरे लिए भारी पड़ रहा था, कठिन हो रहा है कि मैं उन्हें कैसे बताऊँ कि वे कोई पाप भी कर रहे हैं; किन्तु करनी का फल ही तो जीवन में आता ही है अतः पाप तो उसने किया ही है, अन्यथा उसकी परिस्थिति क्यों बनती? ऐसे व्यक्तियों को यह विचार क्यों नहीं आता कि ''जब संकट के बादल सिर पर मंडरा रहे हैं, चारों ओर से विपत्तियाँ घेरे हैं, तरह-तरह की मुसीबतों में फँसे हैं, नाना प्रकार की बीमारियाँ शरीर में स्थाई निवास बना चुकीं हैं; तो ये सब पुण्य के फल तो हैं नहीं, कोई पाप ही किए होंगे, जिनको हम भूल गये हैं।'' और भगवान से पूछने लगे कि - **हे भगवान! हमने पिछले जन्म में ऐसे क्या पाप किये थे? जिनकी इतनी बड़ी सजा हमें मिल रही है।**

(क्रमशः)

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो, प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

एक मोक्षार्थी की पूर्व भूमिका (7)

सच्चे सुख की खोज प्रारम्भ कैसे हो?

– **परमात्मप्रकाश भारिल्ल** (कार्यकारी महामंत्री-टोडरमल स्मारक ट्रस्ट)

संसार के दु:खों में से कुछ दु:खों को सुख मान लिये जाने का सबसे बड़ा दुष्परिणाम यह हुआ कि हमारी सच्चे सुख की खोज ही खो गई। जब खोज ही बंद हो गई तो सुख मिले कैसे?

हम संसारी जीव हैं, मात्र संसार से ही परिचित हैं और इसलिये हमारी कल्पनाओं के घोड़े मात्र संसार की सीमाओं में ही दौड़ते हैं। संसार से बाहर के अलौकिक सुख की हमें कल्पना ही नहीं है।

हमारी कुछ और विशेषताएं हैं जो हमें इस दायरे से बाहर नहीं निकलने देती हैं। हम अत्यधिक आशावादी, संतोषी और समझदार किस्म वाले लोग हैं और हममें धैर्य की भी कमी नहीं।

अब देखिये न! हम अनादिकाल से आज तक इस दु:खी संसार में सुख की खोज में व्यस्त हैं, अब तक तो सुख मिला नहीं पर हम इतने उग्र आशावादी हैं कि हमें अभी भी आशा है कि मिलेगा, जरूर मिलेगा, हमें कभी तो इस संसार में सुख मिलेगा। उक्त आशा के मोहपाश में उलझे हुए हमें जो कुछ भी मिल जाता है, हम उसी में संतोष धारण कर बैठे रहते हैं। यहाँ हमारी समझदारी की प्रवृत्ति सक्रिय हो जाती है और हम सम्पूर्ण सुख नहीं पा सकने के पीछे के संभावित कारणों की व्याख्या करके ही सन्तुष्ट हो जाते हैं और धैर्यपूर्वक उस सही वक्त का इन्तजार करते रहते हैं, जब सबकुछ ठीक होगा और हम सुखी होंगे। हालांकि न तो आज तक ऐसा वक्त कभी आया है और न ही आयेगा; न तो हमारे लिये और न ही इस संसार में किसी और के लिये।

यूं तो आशावादिता, संतोष, समझदारी और धैर्य संसार में बड़े गुण माने जाते हैं; पर यहाँ इस मुकाम पर, इस मामले में ये हमारे लिये आत्मघाती साबित हो रहे हैं, या यूं कह लीजिये कि संसार में ही बने रहने के लिये ये गुण महत्वपूर्ण और सहायक हैं; पर जिन्हें संसार का त्याग करना है उन्हें इनके बारे में पुनर्विचार करना होगा।

हमारी विडम्बना तो देखिये! हम अमुक परिस्थिति, वस्तु या संयोगों में सुख की परिकल्पना कर लेते हैं कि यदि यह मिल जाये तो हमें सुख मिलेगा। फिर हम उसे जुटाने में जुट जाते हैं। अंतत: अमूमन तो हमें वह वस्तु ही प्राप्त नहीं होती है और हम यह भ्रम पाले बैठे रहते हैं कि ''यदि ऐसा हो सकता तो मैं सचमुच सुखी हो जाता पर मेरा दुर्भाग्य कि ऐसा हो नहीं सका''। कभी कदाचित हमें उस इच्छित वस्तु की प्राप्ति हो भी जाये और तब भी हमें वांछित सुख न मिले तो हम फिर कोई न कोई बहाना खोजकर अपने आपको समझा लेते हैं (बुद्धु बना लेते हैं) कि बस जरा सी कसर रह गई, यह ऐसा नहीं हुआ, वैसा नहीं हुआ, ऐसा हो गया, वैसा हो गया, अन्यथा तो बस मेरा काम हो ही गया था।

उदाहरण के लिये - देखो आखिर चने तो मिल ही गये न, मजा भी बहुत आता है चने खाने में, पर क्या करूँ दांत ही नहीं रहे, अन्यथा तो बस मजे ही मजे थे।

या फिर - यदि ये बीमारी मुझे परेशान न करती तो मुझे क्या कमी थी इस जीवन में? सब कुछ तो है मेरे पास धन-दौलत, घर-बार, कुटुम्ब-परिवार, इज्जत-शोहरत, नौकर-चाकर आदि, पर अपनी यह तबीयत ही साथ नहीं देती है तो कोई क्या करे?

इत्यादि अनेकों किन्तु-परन्तु ऐसे हैं जो लगातार असफल बने रहने के बावजूद हमारी आशाओं और दिवास्वप्नों को जीवंत बनाये रखते हैं और हम संसार की इस मृग-मरीचिका के पीछे दौड़ते रहने के लिये अभिशप्त बने रहते हैं।

जिस दिन हमारा यह अतिआशावाद समाप्त हो, हमारा धैर्य जवाब दे दे और जगत की धारा के विपरीत हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे कि हमने अपने सुख और सुकून के लिये जो-जो भी सपने संजोये वे आज तक कभी भी पूरे नहीं हुये, तो हो सकता है संसार में सुख हो ही नहीं। सुख कुछ और है, कहीं और है, मुझे उसकी खोज करनी चाहिये। इस प्रकार जब सच्चे सुख की खोज प्रारम्भ होगी तब एक न एक दिन हम सही निष्कर्ष पर अवश्य पहुंचेंगे।

हमारे जीवन में सच्चे सुख की खोज प्रारम्भ हो उसके लिये आवश्यक है कि संसार एकांत रूप से मात्र दु:खस्वरूप है ही और संसार में सुख है ही नहीं - हमारा यह निर्णय संशय रहित और अंतिम होना चाहिये। यह किन्तु-परन्तु से रहित होना चाहिये; क्योंकि यदि हमारे दिमाग के किसी भी कोने में संसार में सुख प्राप्ति की एक प्रतिशत भी संभावना कायम रही तो अलौकिक सुख की खोज की दिशा में वैसे उग्रपुरुषार्थपूर्वक उद्यम नहीं होगा जो उसके लिये आवश्यक है।

उक्त कार्य किसी के कहने-सुनने मात्र से संभव नहीं है, यह स्वत: अनुभूत होना चाहिये; क्योंकि किसी से सुने हुये निष्कर्षों में वह दृढता आना संभव नहीं जो इसप्रकार के कार्य के लिये आवश्यक है। हमारे निष्कर्ष स्वयं अनुभूत ही होने चाहिये।

स्वयं दृढतापूर्वक उक्त निष्कर्ष पर पहुंचने के लिये हम एक प्रयोग कर सकते हैं -

हम ऐसी समस्त वस्तुओं की एक सूची बना लें जो हमें सुखकर प्रतीत होती है। अब हम एक नोटबुक लें और उसमें दो कॉलम बनाएं, एक ओर सुख लिखें और दूसरी ओर दु:ख। अब हम एक-एक करके गहराई से प्रत्येक उस वस्तु के बारे में विचार करें जो हमें सुखकर प्रतीत होती है कि वास्तव में वह सुख है या दु:ख है। अपने निष्कर्षों को हम उक्त नोटबुक में सम्बन्धित कॉलम में लिखते जाएं। ऐसा तब तक करते रहें जब तक प्रत्येक वस्तु दु:ख वाले कॉलम में न पहुँच जाए।

क्यों, ऐसा क्यों?

क्योंकि यह तो अनन्त ज्ञानियों द्वारा अनुभूत, स्थापित तथ्य है कि संसार में सुख है ही नहीं, इसलिये जब तक तेरे निष्कर्षों में तुझे किसी वस्तु में अभी भी सुख दिखाई देता है तो निश्चित ही उसके बारे में तेरा चिन्तन और प्रयोग यथार्थ से परे, त्रुटिपूर्ण है। इसके बारे में अभी और

चिन्तन, शोध–खोज की आवश्यकता है।

यही वैज्ञानिक विधि है। भौतिक और रसायन–विज्ञान की प्रयोगशालाओं में जब विद्यार्थियों को प्रयोग करने के लिये कहा जाता है तो उन्हें अपना प्रयोग तब तक दुहराना होता है जब तक कि उनका निष्कर्ष स्थापित निष्कर्षों के अनुरूप न हो।

तब तक यही माना जाता है कि उनके प्रयोग में ही कोई भूल रह गई है।

ठीक भी तो है यदि गणित का कोई विद्यार्थी यह कहे कि 2+2=5 तो शिक्षक उससे क्या कहेगा?

यही ना कि एक बार फिर कोशिश करो।

कब तक?

तब तक, जब तक वह विद्यार्थी इस निष्कर्ष पर न पहुंचे कि 2+2=4; क्योंकि सत्य तो यही है।

यदि कोई कहे कि जब अंतत: आपकी ही बात माननी है तो हमसे इतनी कसरत क्यों करवाते हो, हम तो बिना इसके ही आपकी बात मानने को तैयार हैं।

नहीं! जब तक विद्यार्थी स्वयं प्रयोग करके सही निष्कर्ष पर न पहुंचे तब तक उसका ज्ञान, मात्र किताबी ज्ञान ही बना रहता है, उसमें अनुभूति की दृढता नहीं आती है। आज किसी के कहने से एक बात मान ली, कल किसी अन्य के कहने से इसके विपरीत दूसरी बात मानने लगेगा। अपनी पूर्व मान्यता से डिग जायेगा। यदि स्वयं अनुभूति कर किसी तथ्य को स्वीकार करेगा तो उसमें दृढता होगी, वह अंतिम होगा, वह मान्यता कार्यकारी होगी।

उक्त विधिपूर्वक जब हम संसार की प्रत्येक उस वस्तु, परिस्थिति या संयोग के बारे में, जिसे हम अब तक सुखकर मानते आये हैं, दृढतापूर्वक इस निष्कर्ष पर पहुंच जाएं कि यह दु:ख है, दु:खकर है तब सही मायनों में सच्चे सुख की हमारी खोज प्रारम्भ होगी। **(क्रमश:)**

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

15 से 17 दिस.2017	**मंगलायतन– अलीगढ एवं चिदायतन(हस्तिनापुर)**	**चर्चा एवं वेदीप्रतिष्ठा**
22 से 24 दिस.2017	**भीलवाड़ा**	**स्वाध्याय भवन का उद्घाटन एवं प्रवचनसार विधान**
10 से 12 जन. 2018	**मंगलायतन विश्व. अलीगढ**	**सेमिनार**
11 से 15 फर. 2018	**ललितपुर**	**पंचकल्याणक**
17 व 20 फर. 2018	**श्रवणबेलगोला**	**महामस्तकाभिषेक**
23 से 25 फर. 2018	**जयपुर**	**वार्षिकोत्सव**
28 फर.से 2 मार्च 2018	**कोटा (मुमुक्षु आश्रम)**	**वार्षिक मेला (होली)**
3 से 5 मार्च–2018	**इन्दौर (ढाईद्वीप)**	**प्रवचनसार विधान**

साप्ताहिक गोष्ठियाँ सम्पन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में टोडरमल महाविद्यालय की साप्ताहिक गोष्ठियाँ संपन्न हुई।

(1) दिनांक 12 नवम्बर को '**बारह भावना**' विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी की अध्यक्षता पण्डित मनीषजी कहान ने की। श्रेष्ठ वक्ता के रूप में शाश्वत जैन (उपाध्याय कनिष्ठ) एवं ज्ञायक जैन (उपाध्याय कनिष्ठ) रहे। गोष्ठी का संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के ज्ञायक जैन व सागर पाटील ने, ग्रंथ भेंट गौरवजी शास्त्री ने एवं आभार प्रदर्शन जिनेन्द्रजी शास्त्री ने किया।

(2) दिनांक 19 नवम्बर को '**गुरुदेवश्री कानजीस्वामी**' विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी की अध्यक्षता श्री अखिलजी बंसल ने की। मुख्य अतिथि के रूप में श्री कैलाशचंदजी सेठी उपस्थित थे। गोष्ठी में पाँचों कक्षाओं के 15 विद्यार्थियों ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। गोष्ठी का संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के प्रशांत जैन व पारस जैन ने, ग्रंथ भेंट एवं आभार प्रदर्शन जिनेन्द्रजी शास्त्री ने किया।

(3) दिनांक 10 दिसम्बर को '**मिथ्यात्व–भव बंधकारक**' विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया। गोष्ठी के अध्यक्ष डॉ. विमलजी शास्त्री जयपुर (तृतीय बैच) एवं निर्णायक अच्युतकांतजी शास्त्री थे। गोष्ठी में 14 वक्ताओं ने अपने वक्तव्य प्रस्तुत किये। श्रेष्ठ वक्ता संयम जैन नागपुर, जितेन्द्र जैन अमरमऊ, प्रशान्त जैन खेकड़ा एवं दुर्लभ जैन गुढाचन्द्रजी रहे। गोष्ठी का मंगलाचरण दिव्यांश जैन अलवर ने, संचालन शास्त्री तृतीय वर्ष के दिवस जैन छिन्दवाड़ा व अमन जैन दिल्ली ने एवं आभार प्रदर्शन जिनकुमारजी शास्त्री ने किया।

वैराग्य समाचार

(1) कुंभोज बाहुबली निवासी ब्र. गजाबेन शहा का दिनांक 7 दिसम्बर को 104 वर्ष की आयु में अत्यंत शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत सरल स्वभावी, स्वाध्यायी व तत्त्वरसिक महिला थीं। आप टोडरमल महाविद्यालय के छात्रों के प्रति अत्यंत स्नेह रखती थीं; दक्षिण प्रांत के अनेक छात्रों को आपने जयपुर में अध्ययन हेतु प्रेरित किया।

(2) मुमुक्षु आश्रम ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री प्रेमचंदजी बजाज कोटा के पिताजी **श्री पदमचंदजी बजाज** का दिनांक 7 दिसम्बर को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया। आप अत्यंत सरल स्वभावी एवं स्वाध्यायी थे; आप सदैव सादा जीवन उच्च विचार की जीवन शैली को अपनाते थे। टोडरमल स्मारक ट्रस्ट की गतिविधियों की सदैव प्रशंसा व अनुमोदना करते थे।

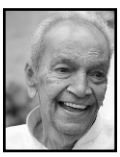

(3) दादर–मुम्बई निवासी श्री प्रकाशचंदजी वखारिया का दिनांक 29 नवम्बर को शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया।

दिवंगत आत्माएं चतुर्गति के दु:खों से छूटकर शीघ्र ही अनंत अतीन्द्रिय आनंद को प्राप्त हों – यही मंगल भावना है।

आगम के आलोक में –

समाधिमरण या सल्लेखना

10

–डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

भव तो भव है, उसमें क्या बनना और क्या बिगड़ना? भव में अच्छे-बुरे का भेद करना उचित नहीं है; क्योंकि जब कोई भव अच्छा है ही नहीं तो उसमें अच्छे-बुरे के भेद में उलझने में समय और शक्ति का व्यर्थ अपव्यय करना समझदारी नहीं है।

जब मैंने समताभाव ही धारण कर लिया, समाधि ही ले ली; तब अब भव में अच्छे-बुरे का भेद करने से क्या लाभ है?

अरे, भाई! जब हम भव से मुक्त होने के लिये ही निकले हैं, तब भव में चुनाव करने में क्यों उलझेंगे? हमने तो स्वयं को चुन लिया; अतः पर में से कुछ चुनने का क्या सवाल है?

बहुत लोग कहते हैं कि हम तो अपने गुरुदेव के साथ ही मोक्ष जायेंगे।

अरे, भाई! साथ की भावना मोक्ष का मार्ग नहीं है; मोक्ष का मार्ग तो एकत्व (अकेलेपन) की भावना है, अन्यत्व (पर से भिन्नत्व) की भावना है।

यदि गुरुदेव स्वयं के पुण्य के प्रभाव से सागरों लम्बी आयुवाले देव हो गये तो क्या तुम भी उनके साथ मोक्ष जाने की भावना से सागरों पर्यन्त संसार में रहने को तैयार हो?

हम तो इतना लम्बा इन्तजार करने के लिये तैयार नहीं हैं।

इसका अर्थ तो यह हुआ कि आप ऊँचे से ऊँचे स्वर्ग में भी जाने को तैयार नहीं है?

यह बात तो अत्यन्त स्पष्ट है कि हम सागरों पर्यन्त संसार में रहने को तैयार नहीं हैं, रहने की भावना वाले नहीं हैं।

यदि समाधिमरण के बाद ऊँचे स्वर्ग में चले गये तो क्या करोगे?

जब तक संसार में रहना होगा, तब तक क्रमबद्धपर्याय अनुसार जैसे रहना होगा, रहेंगे; पर हमारी भावना सागरों पर्यन्त संसार में रहने की कदापि नहीं है।

भगवान आदिनाथ और भरत चक्रवर्ती तो पिछले भव में सर्वार्थसिद्धि में तैतीस सागर तक रहे थे।

हाँ, रहे थे; पर वे भी सागरों पर्यन्त संसार में रहने की भावना वाले नहीं थे। **धर्म भावुकता में नहीं है, विवेक में है। विवेक संगत बात तो यही है कि कोई भी ज्ञानी सागरों पर्यन्त संसार में रहने की भावना वाला नहीं होता।**

यदि हमें भी रहना होगा तो हम भी रहेंगे ही; पर हमारी भावना ऐसी नहीं है।

हमने तो बड़े-बड़े ज्ञानियों को ऐसा कहते सुना है कि हम तो गुरुदेव श्री के साथ ही मोक्ष जायेंगे?

सुना होगा; पर वे भावुकता के क्षणों में ऐसा कह गये होंगे। उक्त कथन को व्यवहार वचन ही समझना चाहिये।

बहुत से लोग पूरे कुटुम्ब-परिवार के साथ मोक्ष जाना चाहते हैं।

उनके लिये तो मैंने बहुत पहले लिखा था कि –

ले दौलत प्राण प्रिया को तुम मुक्ति न जाने पावोगे।
यदि एकाकी चल पड़े नहीं तो यही खड़े रह जावोगे।।

मोक्षमार्ग तो अकेलेपन का मार्ग है। इसमें साथ का क्या काम? **साथ की भावना तो राग की भावना है और जैनदर्शन वीतराग भावरूप हैं।**

यह तो आप जानते ही होंगे कि संघ में रहनेवाले मुनिराजों से एकल विहारी मुनिराज अधिक महान होते हैं। उनकी महानता के आधार पर ही उन्हें एकल विहारी होने की अनुमति मिलती है। **तद्भव मोक्षगामी मुनिराज ही मुख्य रूप से एकल विहारी होते हैं।**

भावना के उद्वेग का नाम समाधि नहीं है; अपितु **विवेक पूर्वक वीतरागभाव की वृद्धि ही समाधि है।**

स्वयं उपस्थित अनिवार्य मृत्यु के अवसर पर समता भावपूर्वक आकुल हुये बिना शान्ति से देहपरिवर्तन के लिये तैयार रहना ही समाधि है। ऐसी समाधिपूर्वक होने वाले मरण को समाधिमरण कहते हैं।

समाधिमरण में सहजता है। न विशेष जीने की भावना है और न जल्दी मरने की भावना है। एकदम सहजता है। जीवन भी सहज, मृत्यु भी सहज। न इस भव सम्बन्धी विशेष विकल्प हैं, न आगामी भव सम्बन्धी।

छूटने वाले संयोग सहजभाव से स्वसमय में छूट रहे हैं और आने वाले संयोग यथासमय आ जायेंगे, मिल जायेंगे। हम तो

सभी के सहज ज्ञाता-दृष्टा हैं और रहेंगे। इसप्रकार का वीतरागभाव ही समाधि मरण हैं, सल्लेखना है।

देह परिवर्तन का यह प्रसंग न शोक का प्रसंग है, न हर्ष का। यह जीवन की एक अनिवार्य किन्तु सहज घटना है; जो यथासमय घट जाती है। इसे सहज रूप से स्वीकार करना ही समझदारी है। **(क्रमशः)**

वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ सांगानेर स्थित दीवान भदीचंदजी के मंदिर में दिनांक 3 दिसम्बर को वेदी प्रतिष्ठा महोत्सव सानन्द संपन्न हुआ।

इस अवसर पर ध्वजारोहण श्री सुरन्द्रजी शाह दीवान ने किया। प्रात: बैंड बाजे सहित जलयात्रापूर्वक मंत्रोच्चार से नवनिर्मित दो वेदियों की शुद्धि हुई। पश्चात् यागमंडल विधानपूर्वक वेदियों पर चन्द्रप्रभ भगवान एवं मुनिसुव्रतनाथ भगवान की प्रतिमाएं विराजमान की गई। प्रतिमा विराजमानकर्त्ता श्री जयकुमारजी शाह आबूजीवाले थे।

विधि-विधान के समस्त कार्य डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के निर्देशन में पण्डित मनोजजी मुजफ्फरनगर के सहयोग से संपन्न हुये।

पंचकल्याणक महोत्सव में गोष्ठियाँ

उदयपुर (राज.) : यहाँ सूरजपोल स्थित फतह उच्च माध्यमिक विद्यालय प्रांगण में आयोजित पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के अवसर पर दो विशेष गोष्ठियों का आयोजन किया गया।

(1) दिनांक 5 दिसम्बर को दीक्षा कल्याणक के अवसर पर '**धन्य मुनिराज हमारे**' विषय पर गोष्ठी का आयोजन डॉ. सुदीपजी शास्त्री दिल्ली की अध्यक्षता में हुआ।

मुख्य वक्ता के रूप में ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, ब्र. हेमचंदजी 'हेम' देवलाली, पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया।

(2) दिनांक 6 दिसम्बर को केवलज्ञान कल्याणक के दिन '**ज्ञान का स्वरूप एवं माहात्म्य**' विषय पर गोष्ठी का आयोजन किया गया, जिसकी अध्यक्षता पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली ने की।

मुख्य वक्ता के रूप में डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, पण्डित विरागजी शास्त्री जबलपुर, डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ एवं श्री अगमजी जैन उदयपुर ने अपना वक्तव्य प्रस्तुत किया। गोष्ठी का संचालन पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर ने किया।

दोनों गोष्ठियों का संयोजन डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ ने किया।

(पृष्ठ 1 का शेष...)

साथ-साथ पंचकल्याणक समिति के समस्त पदाधिकारियों, समस्त दिग. जैन समाज उदयपुर और अनेक नगरों के मुमुक्षु मण्डल व युवा फैडरेशन के सदस्यों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। ●

श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड

श्री टोडरमल स्मारक भवन

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राजस्थान)

शीतकालीन परीक्षा कार्यक्रम सत्र-2018

दिन व दिनांक	नाम ग्रन्थ
शुक्रवार 26 जनवरी 2018	1. बालबोध पाठमाला भाग-1 (मौखिक) 2. जैन बालपोथी भाग-1 (मौखिक) 3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-1 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग-1 5. छहढाला (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) पूर्वार्द्ध 7. मोक्षमार्गप्रकाशक (पूर्वार्द्ध) 8. जैन सिद्धान्त प्रवेशिका (गोपालदासजी बरैया कृत) 9. विशारद प्रथम खण्ड -प्रथम वर्ष
शनिवार 27 जनवरी 2018	1. बालबोध पाठमाला भाग-2 (मौखिक) 2. जैन बालपोथी भाग-2 (मौखिक) 3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग 2 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग-2 5. द्रव्यसंग्रह (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) उत्तरार्द्ध 7. लघु जैनसिद्धान्त प्रवेशिका (सोनगढ़) 8. मोक्षमार्गप्रकाशक (उत्तरार्द्ध) 9. विशारद प्रथम खण्ड -द्वितीय वर्ष 10. विशारद द्वितीय खण्ड -प्रथम वर्ष
रविवार 28 जनवरी 2018	1. बालबोध पाठमाला भाग-3 (मौखिक) 2. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-3 3. रत्नकरण्डश्रावकाचार (पूर्ण) 4. पुरुषार्थसिद्ध्युपाय (पूर्ण) 5. विशारद द्वितीय खण्ड -द्वितीय वर्ष

नोट - (1) सुविधानुसार परीक्षा का समय सुबह 9 बजे से शाम 5 बजे तक के बीच में कभी भी सैट किया जा सकता है।

(2) जहाँ एक से अधिक केन्द्र हों, वे आपस में मिलकर समय निश्चित करें।

(3) यदि किन्हीं विषयों के छात्र आपस में टकराते हों तो परीक्षा सुविधानुसार दिन में दो बार ली जा सकती है।

(4) बालबोध पाठमाला भाग 1, 2, 3 और जैन बालपोथी भाग 1 व 2 की परीक्षायें मौखिक लेवें। शेष सभी विषयों की परीक्षायें लिखित में लेवें।

- प्रबंधक, परीक्षा बोर्ड

पञ्चकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव संपन्न

नागपुर (महा.) : यहाँ वीर वाटिका-एम्प्रेस सिटी में आयोजित श्री 1008 आदिनाथ दिगम्बर जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव श्री कुन्दकुन्द दिगम्बर जैन स्वाध्याय मंडल ट्रस्ट के तत्त्वावधान में एवं पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के निर्देशन में शुक्रवार, दिनांक 24 नवम्बर से बुधवार 29 नवम्बर 2017 तक अनेक विशिष्ट कार्यक्रमों सहित सानन्द सम्पन्न हुआ।

महोत्सव में आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी के सी.डी. प्रवचनों के साथ अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त तार्किक विद्वान **डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल** के पंचकल्याणक विषय पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला। इस अवसर पर डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी व डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर द्वारा प्रतिदिन प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित अश्विनभाई मलाड-मुम्बई, पण्डित पदमचंदजी सर्राफ आगरा, डॉ. राकेशजी शास्त्री नागपुर, डॉ. मुकेशजी शास्त्री 'तन्मय' विदिशा, पण्डित सुबोधजी सिंघई सिवनी, पण्डित श्यामलालजी ग्वालियर व पण्डित प्रसन्नजी शेटे के प्रवचनों का भी लाभ मिला।

इनके अतिरिक्त पण्डित आलोकजी कारंजा, पण्डित नंदकिशोरजी काटोल, पण्डित अशोकजी वैभव, पण्डित नितुलजी शास्त्री, पण्डित अंकुरजी शास्त्री, पण्डित आकेशजी शास्त्री आदि बाहर से पधारे अनेक विद्वानों, अनेक स्थानीय विद्वानों एवं ब्रह्मचारिणी बहनों का भी सान्निध्य व समागम प्राप्त हुआ।

महोत्सव ब्र. अभिनन्दनकुमारजी शास्त्री देवलाली के प्रतिष्ठाचार्यत्व, पण्डित विपिनजी शास्त्री नागपुर के निर्देशन एवं पण्डित संजयजी शास्त्री मंगलायतन के मंच संचालन में संपन्न हुआ। सह-प्रतिष्ठाचार्य के रूप में ब्र. नन्हे भैया सागर, पण्डित ऋषभजी छिन्दवाड़ा, पण्डित सुनीलजी धवल, पण्डित रमेशजी सनावद, पण्डित विवेकजी शास्त्री इन्दौर, श्री सुबोधजी ग्वालियर आदि अनेक महानुभाव उपस्थित थे।

बालक ऋषभकुमार के माता-पिता बनने का सौभाग्य श्रीमती शीला -प्रेमचंद जैन, श्योपुर को प्राप्त हुआ। महोत्सव के सौधर्म इन्द्र-इन्द्राणी श्री राकेश-शिल्पा मोदी, कुबेर इन्द्र-इन्द्राणी श्री आर.के. जैन-अनिता जैन मुम्बई एवं यज्ञनायक-नायिका श्री अरुण-अनिता मोदी, सागर थे। प्रतिष्ठा मंच का उद्घाटन श्री अभयकुमारजी पनवेलकर परिवार ने एवं प्रतिष्ठा मण्डप का उद्घाटन श्री सुरेन्द्रजी नखाते परिवार नागपुर ने किया। महोत्सव का ध्वजारोहण श्री प्रवीणजी तायल के करकमलों द्वारा किया गया।

दिनांक 26 नवम्बर को बाल तीर्थंकर का सर्वप्रथम अभिषेक करने का सौभाग्य श्री लालचंदजी मोदी परिवार, नागपुर को मिला। सायंकाल 40 फीट का कांच से बना विशाल पालना दर्शनीय रहा, जिसका उद्घाटन श्री निखिल-प्रज्ञा दाभाडे, नागपुर ने किया। सर्वप्रथम आहारदान का सौभाग्य श्री सुधीरजी जैन कटनी सुभाष ट्रांसपोर्टवालों को मिला।

मूलनायक महावीरस्वामी के भेंट एवं विराजमानकर्त्ता श्री अजितप्रसादजी वैभवकुमार जैन दिल्ली थे।

संपूर्ण महोत्सव में पूजन, प्रवचन, आध्यात्मिक गोष्ठियों, बाल-कक्षाओं, भक्ति एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों की धूम मची रही। सांस्कृतिक कार्यक्रमों के अन्तर्गत विद्या निकेतन के छात्रों द्वारा '**अहो चैतन्य (बढते कदम)**, ज्ञान चेतना मंच उज्जैन द्वारा '**वैराग्य**', संयमजी शास्त्री जयपुर द्वारा '**विद्वानों से सीधी बात**' आदि कार्यक्रम आयोजित हुये। संपूर्ण कार्यक्रम में देश-विदेश से पधारे लगभग 2 हजार साधर्मियों ने धर्मलाभ लिया।

महोत्सव में अनेक विशिष्ट बातें रहीं; जैसे - सम्पूर्ण प्रतिष्ठा एक ही परिसर में हुई; सौंदर्य प्रसाधनों व पशुओं का उपयोग नहीं हुआ; बच्चों के लिये अलग से पालनाघर खोला गया, जिसमें पाठशाला, झूले, जंपर आदि की व्यवस्था हुई; जन्म कल्याणक के अतिरिक्त सभी जुलूस परिसर में ही निकाले गये; प्रवचनों व तत्त्वचर्चा की मुख्यता रही; अति अल्प समय में बोलियाँ हुईं; रात्रि 10 बजे कार्यक्रमों की समाप्ति हुई।

महोत्सव को सफल बनाने में समिति के कार्याध्यक्ष श्री सुदीपजी व महामंत्री श्री नरेशजी के अतिरिक्त समस्त पदाधिकारियों और अनेक नगरों के मुमुक्षु मण्डल व युवा फैडरेशन के सदस्यों का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा। ●

विशेष प्रोजेक्ट तैयार किया

जयपुर (राज.) : यहाँ ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में टोडरमल महाविद्यालय के उपाध्याय कनिष्ठ के विद्यार्थियों ने दिनांक 29 नवम्बर को डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल द्वारा रचित 'सत्य की खोज' पर प्रोजेक्ट तैयार किये, जिसके माध्यम से आधुनिक शैली में समस्त विषय की विवेचना की गई। इसका उद्घाटन पण्डित शांतिकुमारजी पाटील ने एवं निर्देशन जिनेन्द्रजी शास्त्री ने किया। इस उपलक्ष्य में श्रीमती कमला भारिल्ल द्वारा 5100/- रुपये की राशि विद्यार्थियों हेतु प्रदान की गई।

प्रकाशन तिथि : 13 दिसम्बर 2017

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **डॉ.संजीवकुमार गोधा**, एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी. एवं **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com